त्योहार का आनन्द
(पत्र लेखन)

भुवनेश्वर, ओड़िशा
15 अगस्त, 2009

प्रिय शोभन भैया,

तुम्हारा पत्र मिला, पढ़कर खुशी हुई कि तुम ओड़िशा के त्योहारों के बारे में जानना चाहते हो । तुम तो जानते ही हो कि आषाढ़ का महीना आते ही ओड़िशा प्रांत में खुशी की लहरें उठती हैं । बारिश की दो एक बौछारें, बादलों की गड़गड़ाहट तापमान को कम कर देती हैं । मौसम सुहाना होने लगता है । किसान हल लेकर खेतों की ओर चल पड़ते हैं । खेती तो यहाँ का पेशा है । आसमान में बादल घुमड़ने लगते हैं तो लड़कियों का मजेदार त्योहार रजोत्सव शुरू हो जाता है । लड़कियों का दल नए कपड़ों में सज धज कर झूला झूलने लगती हैं । उनके गीतों की मूर्च्छना से गाँव-बस्तियाँ गूँजने लगती हैं । तरह-तरह के पकवान बनते हें, पान के बीड़े सजाए जाते है । लड़कियों की आवाजाही से गली आँगन जगमगा उठते है । नूपुर और पायजेबों की रुनझुन किसको अच्छी नहीं लगती ?

यहाँ की खासियत यह है कि जब एक त्योहार खतम होता है, तो दूसरा त्योहार आ जाता है । ओड़िशा के सारे पर्व-त्योहारों का राजा है- रथयात्रा । तुम तो जानते हो कि पुरी के जगन्नाथ जी का मन्दिर दुनिया में मशहूर है । आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को जगन्नाथ बड़े भाई बलभद्र और बहिन सुभद्रा की रथयात्रा होती है । उनकी प्रतिमाओं को तीन अलग-अलग रथों पर बिठाकर उनके जन्मस्थान 'गुण्डिचा घर' में ले जाया जाता है । मन्दिर के सिंहासन से सेवायत (सेवक) लोग प्रतिमाओं को बड़ी धूमधाम से पैदल लेकर चलते हैं इसे ठाकुर का 'पहण्डि-बिजे' कहा जाता है । लाखों लोग पुरी में जमा होते हैं ।

सबसे बड़ी बात यह कि इस अवसर पर कोई भी भक्त ठाकुरों की मूर्त्तियों को छू सकता है । छाती से लगा सकता है । यहाँ भक्त और भगवान एक हो जाते हैं । ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, बड़े- छोटे, बच्चे-बूढ़े-जवान सब उनके पास जा सकते हैं। उनकी पूजा करते हैं । उनका रथा खींचते हैं । गुण्डिचा घर में हर शाम को ठाकुरों को नए-नए आभूषण और नए-नए वस्त्रो से सजाया जाता है । दशमी को जगन्नाथ की वापसी यात्रा शुरू होती है । उन्हें फिर रथ-पर बिठाकर मन्दिर की ओर लाया जाता हैं । एकादशी की रात को रथ पर ही ठाकुर प्रतिमाओं को सैंकडों किलोग्राम वजन के सोने के आभूषणों से सजाया जाता है । इस दृश्य को देखने के लिए लाखों लोग दूर दूर से आते हैं । हम लोग भी इस रथयात्रा को देखने गए थे । जगन्नाथ आदि के रूपों को देखते ही बनता था । प्रभु जगन्नाथ मिलजुलकर रहने की सीख देते हैं । तुम कभी रथयात्रा देखने का कार्यक्रम बनाओ । हम लोग यहाँ तुम्हारे आवभगत करने को उत्सुक हैं । घर में पूज्य मामा और मामी जी को प्रणाम कहना । आशा करता हूँ कि तुम सपरिवार कुशल में होगे ।

तुम्हारा
अमरेश

१. आप भी ऐसा पत्र अपने मित्र और परिवार के सदस्यों को लिखिए ।